Important Questions for Class 12 Hindi (Antra)

Chapter 4 – बनारस, दिशा

1. "बनारस" कविता में कवि ने इस प्राचीन शहर की संस्कृति और माहौल को किस प्रकार चित्रित किया है?

उत्तर:
"बनारस" कविता में कवि केदारनाथ सिंह ने इस शहर की प्राचीनता, आध्यात्मिकता, और सांस्कृतिक वैभव को जीवंत रूप से चित्रित किया है। बनारस को शिव की नगरी और गंगा के साथ जुड़ी आस्थाओं का केंद्र बताते हुए कवि ने यहां की धार्मिक गतिविधियों, मंदिरों, घाटों और भिखारियों के कटोरों में वसंत के आगमन को दर्शाया है। शहर का माहौल ठेठ बनारसीपन से भरा हुआ है, जहां हर कार्य अपनी रौ में होता है। यह शहर आस्था, श्रद्धा, विश्वास और भक्ति का मिश्रण है। गंगा के किनारे बैठकर लोग अपनी दिनचर्या में मगन रहते हैं, और शहर की यह विशेषता ही बनारस की पहचान बनती है।

2. "बनारस" कविता में कवि ने वसंत के आगमन का जो चित्रण किया है, उसे किस प्रकार समझा जा सकता है?

उत्तर:
कवि ने वसंत के आगमन का चित्रण करते हुए कहा है कि बनारस में वसंत अचानक आता है। जब वसंत आता है तो धूल का एक बवंडर लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्लों से उठता है और पुरानी गलियों में समा जाता है। यह धूल शहर के वातावरण को भर देती है, जिससे बनारस की भूमि और वातावरण में एक तरह की नमी और बदलाव का अहसास होता है। इस चित्रण में कवि ने वसंत के आगमन को एक प्राकृतिक और जीवनदायिनी प्रक्रिया के रूप में दर्शाया है, जो न केवल मौसम में बदलाव लाती है, बल्कि लोगों के जीवन में भी एक नई ऊर्जा का संचार करती है।

3. "बनारस" कविता में कवि ने किस प्रकार बनारस के धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाया है?

उत्तर:
कवि ने बनारस को एक ऐसे शहर के रूप में प्रस्तुत किया है, जो धार्मिक आस्थाओं, संस्कृति और आध्यात्मिकता का संगम है। वह बताते हैं कि बनारस में लोग गंगा के घाटों पर स्नान करते हैं, यहाँ

की आत्मीयता और भक्ति की भावना हर कार्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। घाटों पर जलने वाली दीपमालाएँ, मंदिरों में गूंजते मंत्र, और भिखारियों के कटोरे, जिनमें वसंत का प्रवेश होता है, यह सभी बनारस की भक्ति और आस्था का प्रतीक हैं। यह शहर किसी एक स्वरूप में सीमित नहीं है; यह आध्यात्मिकता, विश्वास और जीवन के विभिन्न पहलुओं का अद्भुत मिश्रण है।

4. "दिशा" कविता में कवि ने बच्चों की दृष्टि को किस प्रकार चित्रित किया है?

उत्तर:
कवि केदारनाथ सिंह ने "दिशा" कविता में बच्चों की सरलता और उनके अद्भुत दृष्टिकोण को बड़े सुंदर तरीके से चित्रित किया है। वह कहते हैं कि जब उन्होंने एक बच्चे से पूछा कि हिमालय किधर है, तो बच्चे ने अपनी पतंग की दिशा की ओर इशारा करते हुए बताया कि हिमालय उधर है। यह एक बालसुलभ उत्तर था, जिसमें बच्चे की अपनी कल्पना और यथार्थ के प्रति एक सहज दृष्टिकोण था। कवि ने यह स्वीकार किया कि बच्चों का यथार्थ और दृष्टिकोण अपने आप में निराला और आकर्षक होता है, जिसे हमें समझने और अपनाने की आवश्यकता है।

5. "बनारस" कविता में "धूल" का चित्रण किस रूप में किया गया है?

उत्तर:
कवि ने "धूल" का चित्रण वसंत के आगमन के साथ जोड़ा है। वह कहते हैं कि जैसे ही वसंत का मौसम आता है, बनारस के मोहल्लों से धूल का बवंडर उठता है। यह धूल शहर के हर कोने में फैल जाती है और पुरानी बनारसी जीभ को किरकिरा कर देती है। धूल का यह बवंडर बनारस के हर हिस्से में समा जाता है, जिससे शहर के जीवन का उल्लास और गति महसूस होती है। यहाँ धूल न केवल एक प्राकृतिक तत्व है, बल्कि यह शहर की पुरानी और बदलती हुई स्थिति का प्रतीक भी है।

6. "बनारस" कविता में बनारस के जीवन को किस प्रकार के संकेतों के माध्यम से समझाया गया है?

उत्तर:
कवि ने बनारस के जीवन को सूक्ष्म बिंबों और संकेतों के माध्यम से दर्शाया है। उदाहरण के तौर पर, बनारस के घाटों पर बैठकर भिखारियों के कटोरों में वसंत का उतरना, घाटों पर जलने वाली दीपमालाएँ, और मंदिरों के घंटों की ध्वनि - ये सभी संकेत बनारस के जीवन में गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं। इसके साथ ही, बनारस में जीने का तरीका और यहाँ का वातावरण अपने अनोखे रूप में जीवन को समझने का तरीका है, जो पारंपरिक और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखता है।

7. "बनारस" कविता में ध्वन्यात्मकता और दृश्य बिंब का क्या महत्व है?

उत्तर:
कवि ने "बनारस" कविता में ध्वन्यात्मकता और दृश्य बिंबों का सुंदर प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, घाटों पर बजते घंटे, मंदिरों में गूंजते मंत्र, और गंगा के किनारे जलती दीपमालाएँ - ये सभी ध्वन्यात्मक चित्र बनाते हैं जो बनारस के माहौल को जीवंत रूप से चित्रित करते हैं। इसके साथ ही, "धूल की किरकिराहट" और "वसंत का उतरना" जैसे दृश्य बिंबों से कविता में बनारस की जीवंतता और गति को महसूस किया जा सकता है।

8. "बनारस" कविता में वसंत के आगमन का और क्या सांस्कृतिक संदर्भ है?

उत्तर:
"बनारस" कविता में वसंत के आगमन का सांस्कृतिक संदर्भ बनारस के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन से जुड़ा हुआ है। बनारस में वसंत का आगमन एक नए जीवन, नई उम्मीदों और उल्लास का प्रतीक है। यह समय है जब घाटों पर लोग स्नान करते हैं, गंगा के किनारे दीप जलाते हैं, और मंदिरों में पूजा होती है। वसंत के इस समय में शहर का हर हिस्सा जीवन से भर जाता है। यह बदलाव न केवल मौसम में आता है, बल्कि लोगों के जीवन में भी नए उत्साह और आस्था का संचार करता है।

9. "बनारस" कविता में यह कैसे बताया गया है कि बनारस का रूप निरंतर अपरिवर्तित रहता है?

उत्तर:
कवि ने यह कहा है कि बनारस में समय के साथ कोई बदलाव नहीं आता। यहाँ सब कुछ धीरे-धीरे होता है - लोग धीरे-धीरे चलते हैं, घंटियाँ धीरे-धीरे बजती हैं, और दिन भी धीरे-धीरे ढलता है। यह लय शहर के हर पहलू को दृढ़ता से बांधने का काम करती है। गंगा, नावें, और तुलसीदास की खड़ाऊं जैसी चीजें सदियों से वैसे ही हैं। इस स्थिरता और अपरिवर्तित रूप में बनारस अपनी पहचान बनाए हुए है।

10. "दिशा" कविता में बालक की दृष्टि में क्या संदेश छुपा है?

उत्तर:
"दिशा" कविता में बालक की दृष्टि में एक गहरी संदेश छिपा है। बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को अपनी नज़र से देखते हैं, और उनका यथार्थ दूसरों से अलग होता है। बच्चे के लिए हिमालय की दिशा उसकी पतंग की दिशा से जुड़ी हुई होती है, जो कि उसकी सोच का सरल और निर्दोष रूप है। यह दर्शाता है कि बच्चों के पास एक निष्कलंक दृष्टिकोण होता है, जो हमें जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखा सकता है।

11. कविता ‘बनारस’ में बनारस के सांस्कृतिक वैभव और आस्था को किस प्रकार चित्रित किया गया है?

उत्तर:

कविता 'बनारस' में कवि केदारनाथ सिंह ने बनारस के सांस्कृतिक और धार्मिक वैभव का बारीकी से चित्रण किया है। बनारस को शिव की नगरी और गंगा के साथ एक गहरी आस्था का केंद्र माना जाता है। यहाँ की हर वस्तु, क्रिया, और वातावरण में आस्था, श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, और आश्चर्य की मिलीजुली भावना समाहित है। गंगा में बँधी नाव, घाटों पर जलते दीप, चिता की अग्नि, और भिखारियों के कटोरे जिनमें वसंत उतरता है, यह सब बनारस के चरित्र को प्रदर्शित करते हैं। इस शहर की धार्मिक और आध्यात्मिकता को कवि ने सरल लेकिन गहरे तरीके से चित्रित किया है, जहां हर कार्य अपनी "रौ" में होता है और हर चीज एक लय में बंधी हुई दिखाई देती है।

12. कविता ‘दिशा’ के माध्यम से कवि ने बालक के दृष्टिकोण का क्या महत्व बताया है?

उत्तर:

कविता 'दिशा' के माध्यम से कवि केदारनाथ सिंह ने बालक की दृष्टि और उसकी सहज समझ को महत्व दिया है। कवि ने एक बच्चे से पूछा कि हिमालय किधर है, तो बच्चे ने यह बताया कि हिमालय वही दिशा में है, जिधर उसकी पतंग उड़ रही है। यह बालक का सरल, सीधा और विशुद्ध दृष्टिकोण है। कविता में कवि इसे एक महत्वपूर्ण समझ के रूप में प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि बच्चा अपनी दुनिया को अपने तरीके से देखता है और उसका यथार्थ उसी पर आधारित होता है। इस विचार से कवि यह संदेश देते हैं कि हर व्यक्ति का अपना दृष्टिकोण होता है और हम बच्चों से भी सीख सकते हैं कि जीवन को सादा और निष्कलंक दृष्टि से देखा जाए।

13. ‘बनारस’ कविता में ‘धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय’ का क्या महत्व है?

उत्तर:

'बनारस' कविता में 'धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय' से कवि ने शहर की जीवनशैली का विश्लेषण किया है। बनारस की जीवन शैली में सभी कार्य धीरे-धीरे होते हैं - धूल उड़ती है, लोग चलते हैं, घंटे बजते हैं, और शाम होती है। यह सामूहिक लय पूरी शहर की गति को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ सभी चीजें एक साथ धीरे-धीरे चलती हैं, बिना किसी बाधा के। यह शहर के स्थिरता और परंपरा को प्रदर्शित करता है। यह लय काशी की प्राचीनता, आध्यात्मिकता, और समृद्धि को बनाए रखती है, और इसका महत्व यह है कि यह शहर की एकता, संतुलन, और निरंतरता को दर्शाता है।

14. 'बनारस' कविता में कवि ने वसंत के आगमन को कैसे चित्रित किया है?

उत्तर:

कवि ने 'बनारस' कविता में वसंत के आगमन को बहुत ही विशिष्ट और जीवंत तरीके से चित्रित किया है। जब वसंत आता है, तो बनारस के लहरतारा और मडुवाडीह जैसे मोहल्लों से धूल का बवंडर उठता है, जो पूरे शहर में फैल जाता है। यह धूल शहर के हर हिस्से में समा जाती है और उसे 'किरकिराती हुई जीभ' की तरह महसूस किया जाता है। यह चित्रण बनारस के पुराने और महान शहर के वातावरण की सजीवता को उजागर करता है, जहाँ वसंत अपने साथ न केवल मौसम का बदलाव, बल्कि एक नई ऊर्जा का संचार भी करता है। इस वर्णन में कवि ने शहर के पुराने होने और साथ ही जीवंत रहने की भावना को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त किया है।

15. कविता 'बनारस' में 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर:

'बनारस' कविता में 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से कवि ने बनारस की भिखारियों की स्थिति और उनके जीवन की सादगी को बिंबित किया है। वसंत के मौसम में, जिन कटोरों में पहले केवल खालीपन था, उनमें अब जीवन और उम्मीद का संचार होता है। यह वसंत का प्रभाव है जो प्रत्येक जीवित चीज में नवीनीकरण और उल्लास लाता है, चाहे वह एक भिखारी का कटोरा हो। इस चित्रण के माध्यम से कवि ने यह दिखाया है कि बनारस के वातावरण में जीवन की सभी स्थितियाँ – खुशी और दुःख, भरना और खाली होना, – साथ-साथ चलती रहती हैं। 'वसंत का उतरना' यह संकेत करता है कि यहां के लोग और यहां की संस्कृति किसी न किसी रूप में जीवन की आशा और ऊर्जा से भरपूर रहती है।